http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2024) वर्ष 4, अंक 1, 1-2

Article ID: 344

कीवी की खेती

रामेश्वर दयाल[1], मनोज यादव[1], निधि मनि चनियल[2], हिना चनियल[2], विकाश ओली2, पंकज कुमार[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, कालेज ऑफ एग्रीकल्चर, पिथौरागढ़ ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन बुंगाछीना, पिथौरागढ़, उत्तराखंड

[2]बी.एस.सी. एग्रीकल्चर, पिथौरागढ़ ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन बुंगाछीना, पिथौरागढ़, उत्तराखंड

कीवी की खेती के लिए जनवरी का महीना सबसे अच्छा होता है। 1000 से 2000 मीटर के बीच समुद्र तल से उचाई वाले स्थान उपयुक्त होते है। कीवी की खेती में ठंडी जलवायु लाभदायक होती हैं और गर्म व तेज हवा कीवी की खेती करने के लिए नुकसानदायक होती है। कीवी के पौधे का रोपण करते समय तापमान 15 डिग्री सेल्सियस तक होना चाहिए। भारत मे कीवी उत्पादक राज्य हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, नागालैंड, केरल, उत्तरप्रदेश, जम्मू-कश्मीर, सिक्किम, अरूणाचलप्रदेश और मेघालय आदि है। भारत में उत्पादित कीवी का लगभग 80% अरुणाचल प्रदेश से ही आता है, जो कि 7000 मीट्रिक टन के लगभग है।

कीवी से स्वास्थ्य लाभ:

कीवी में प्रोटीन को घुलाने वाला एंजाइम पाया जाता है जो प्रोटीन के पाचन में मदद कर सकता है। किवी फल डिप्रेशन को दूर करने में मदद कर सकता है। किवी फल पोटेशियम का एक अच्छा स्रोत है, जो गुर्दे की पथरी में मदद कर सकता है। कीवी आयरन के अवशोषण में मदद कर सकता है; जिससे एनीमिया के उपचार में सहायता मिल सकती है। कीवी सुबह खाने के बहुत फायदे हैं। इसमें फाइबर पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है, जो पाचन तंत्र को स्वस्थ रखता है। डेंगू की बीमारी में कीवी खाना बहुत लाभदायक माना जाता है।

पोषण का खजाना है कीवी:

कीवी खाने से शरीर को प्रयाप्त मात्रा में विटामिन और पोषक तत्व मिलते हैं। कीवी एक एंटी-ऑक्सीडेंट और एंटी-इंफ्लेमेटरी फल है। इसका सेवन करने से बॉडी में रोग प्रतिरोध क्षमता बढ़ जाती है। इसमें विटामिन बी, विटामिन सी, कैल्शियम, फाइबर, पोटैशियम, राइबोफ्लेविन, बीटा कैरोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फॉस्फरोरस, कॉपर और जिंक सहित कई पोषक तत्व पाए जाते हैं।

कीवी की खेती में पौध सामानतयः तीन तरह से तैयार कर सकते है।

1. **बडिंग विधि** : इस विधि से कीवी की पौध तैयार करना सबसे उचित रहता है। इस विधि में कीवी के फल से बीजों को निकाल लें और उन्हें साफ करके अच्छी तरह से सुखा लें। सुखाने के एक सप्ताह बाद बीज की बुवाई करें। नर्सरी तैयार करते हुए ध्यान रखें कि बुवाई के बाद एक सप्ताह के लिए इस पर सीधी धूप ना पड़े, इसलिए इसे अंदर ही रखें। इसके बाद क्यारियों पर मल्चिंग कर दें और जुलाई तक पौध पर छाया रहने दें। जब पौधे में 4 से 5 पत्ते आ जाए तो रोपाई का काम करें, मई या जून महीने में इसे नर्सरी में लगाया जा सकता है।
2. **ग्राफ्टिंग** : ग्राफ्टिंग या कलम विधि से कीवी की पौध तैयार करने के लिए एक साल पुरानी शाखाओं को काट लेना चाहिए। इसमें 2 से 3 कलियां होनी चाहिए। इन शाखाओं की लंबाई 15 से 20 सेमी के मध्य होनी चाहिए। अब 1000 पीपीएम आईबी नाम का रूट ग्रोथ हार्मोन लगाकर मिट्टी में

गाड़ दें। याद रहे कि कलम गाड़ने के बाद हिलना नहीं चाहिए और इस पर सीधी तेज धूप भी नहीं लगनी चाहिए। कलम विधि से कीवी की पौध जनवरी में तैयार करना चाहिए। कलम विधि से तैयार हुआ पौधा एक साल बाद रोपाई के लिए तैयार हो जाता है।

3. **लेयरिंग विधि** : कीवी के पौध की एक साल पुरानी शाखा का चुनाव कर उसकी एक इंच छाल चारों तरफ से हटा दे। इसके बाद उसके चारों तरफ अच्छी तरह से मिट्टी बांध दें। इसमें हवा नहीं जानी चाहिए। इसके बाद करीब एक महीन के भीतर इसमें से नस्से निकलने लगेंगे। इसके बाद इस शाखा को मुख्य पौध से काटकर दूसरी जगह लगाना चाहिए। इसको मुख्य पौधे से हटाते समय ध्यान रखें कि शाखा चिरनी नहीं चाहिए, और जहां मिट्टी बांधी थी उसके ठीक नीचे से काटें।

कीवी की खेती के लिए मिट्टी:

कीवी की खेती करने के लिए गहरी दोमट मिट्टी व हलकी अम्लीय मिट्टी उपयुक्त होती है। मिट्टी का Ph मान 5 से 6 तक का होना चाहिए। कलम लगाने के लिए बालू, सड़ी खाद, मिट्टी, लकड़ी का बुरादा और कोयले का चूरा 2:2:1:1 के अनुपात में मिलाना उचित रहता है।

पौधों का रोपण :

कीवी की खेती में यदि आप उच्च गुणवत्ता वाले फल प्राप्त करना चाहते हैं, तो इसके लिए आपको नर्सरी में तैयार किया हुआ उच्च गुणवता और अच्छी वैराइटी के पौधों का रोपण करना चाहिए। कीवी के पौधों का रोपण एक लाइन में करें। लाइन से लाइन की दूरी 3 मीटर व लाइन में पौधे से पौधे के बीच 6 मीटर की दूरी रखें। रोपण हेतु गड्ड़ा खोदें और इन गड्ढ़ों को कुछ दिनों के लिए खुला छोड़ दें, ताकि मिट्टी में उपस्थित कीड़े मकोड़े मर जाएंगे। गड्ढ़ों में गोबर की खाद या ट्रायकोडर्मा मिश्रित कम्पोस्ट से लगभग 20 से 25 सेटीमीटर की ऊंचाई तक भर दें। अब पौधों का रोपण करें और मिट्टी डालकर गड्ढ़ों को अच्छे से भर दें। ध्यान रहे इन पौधा का रोपण बसंत ऋतु की शुरुआत में करें।

सिंचाई:

कीवी के पौधे लगाने के तुरंत बाद सिंचाई करें। गर्मी के मौसम में 3 से 4 दिन के अंतराल में सिंचाई करें, गर्मी के समय सिंचाई न करने पर इसके फल की गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ सकता है।

कीवी में फल आने का समय:

कीवी के पेड़ शुरुआत के 2-3 वर्षों में फल नहीं देते, कीवी के पेड़ में 5 वर्ष के बाद फल लगने की शुरुआत होती है। 10 वर्ष बाद कीवी के पेड़ अच्छी संख्या में फल देना शुरू कर देते हैं। एक पेड़ औसतन 40-60 किलो कीवी फल का उत्पादन करता है। अक्टूबर से नवम्बर में आप फल पकने के बाद इसकी तुड़ाई कर सकते हैं। आप इन्हें तोड़कर 4 माह तक सुरक्षित रख सकते हैं, लेकिन ध्यान रहे ठंडे स्थान पर ही कीवी के फल का भंडारण करें।

कीवी में लगने वाले रोग व बचाव:

कीवी में कालर रॉट, क्राउन रॉट रोग पौधे के विकास को प्रभावित करते हैं। इन रोगों से बचाव के लिए जीवाणुनाशक का छिड़काव कीवी के पौधे में कली खिलने से पहले अवश्य करना चाहिए।

कीवी फल की कीमत व कीवी की खेती से कमाई:

बाज़ार में कीवी का फल 50 से 60 रुपये तक आसानी से बिक जाता हैं। यदि आप एक हैक्टेयर में कीवी की खेती करते हैं तो हर वर्ष आसानी से 10 से 15 लाख रुपये तक की कमाई कर सकते हैं।

पके हुए कीवी की पहचान:

अगर कीवी वजन में बहुत अधिक भारी है और उसका छिलका भी मोटा या सख्त है तो समझ लें कि वह अभी पूरी तरह से पका हुआ नहीं है। इतना ही नहीं, आपको कीवी के अगले और पिछले दोनों ही हिस्से को देखना चाहिए। अगर कीवी में आपको ज्यादा हरापन लग रहा है या दबाने पर वह सख्त महसूस हो रहा है तो वह कच्चा है।